शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir जुलाई २०१६, संस्करण १८

> हमें धर्म की रक्षा करते हुए अपने आप की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि पतन धर्म का नहीं, हमारा खुद का हो रहा है ।

प्रिय आत्मन, सप्रेम जय गुरुदेव ! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का अठारहवाँ अंक प्रस्तुत है । इस अंक में महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा कुछ समय पूर्व मुम्बई आनन्द महोसव में दिये गये प्रवचन के सम्पादित अंश प्रस्तुत है ।

श्रीगुरुदेव का प्रवचन

हमें अगर मानवता को आगे चलाना है तो सनातन धर्म को बनाये रखना पड़ेगा । हम ये सोचते हैं कि हमको धर्म की रक्षा करनी चाहिए लेकिन मैं मानता हूँ कि हमें धर्म की रक्षा करते हुए अपनी रक्षा करनी चाहिए क्योंकि पतन धर्म का नहीं हमारा खुद का हो रहा है । इसलिए उठाना है तो अपने आप को उठाओ । धर्म तो अपने स्थान पर टिका हुआ है । हम सब जानते हैं कि कितने महापुरुष हुए और कितने चले गए परन्तु धर्म अपने स्थान पर बना रहा और गलत हो रहा है तो हम मनुष्यों में, इसलिए हम मनुष्यों को अपनी बुद्धि

जो सतत् सत् चिन्तन और अच्छा विचार करता है वो अच्छा विचार और चिन्तन करते हुए सन्तों के पास सत्संग करते हुआ शान्ति को प्राप्त करता है ।

को, अपने विवेक को जगाना है, उठाना है । शास्त्र कहता है कि मनुष्य जन्म की कुछ विशेषता है कि हम धर्म को समझते हैं और उसका अनुकरण तथा पालन कर सकते हैं । वो जो प्रार्थना है कि "दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात् । शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्" हमारे ऋषिमुनि द्वारा प्रदत्त ये प्रार्थना है कि दुर्जन सज्जन हों और मेरे अनुसार सज्जन की व्याख्या है वो ये है कि जो सतत् चिन्तन और अच्छा विचार करता हुआ सन्तों के पास सत्संग करते हुए शान्ति को प्राप्त करता है । मुझसे लोग पूछतें हैं कि आप स्थिर कैसे बैठते हैं तो मैंने कहा कि हमारे योगसूत्र में एक सूत्र आता है कि "स्थिरं सुखं आसनम" कि हमारा आसन सुखी और स्थिर होना चाहिए जिससे हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे चल सकें । हमको पहले स्थिर होना पड़ेगा क्योंकि स्थिर होकर ही सुख का अनुभव हो सकता है । सुख का अनुभव करेंगे तब कहीं स्थिर हो पायेंगे और सन्तों की वाणी को समझ पायेंगे । हमारे पास विवेक, बुद्धि सब कुछ है किन्तु उसका उपयोग किस प्रकार करना है इस बात को हमारा सनातनधर्म बोध कराता है । कठोपनिषद् में आता है कि "उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" हमारे ऋषिमुनियों ने पहले ही कह दिया है कि "दुर्गमस्तत्र तत्पथ कवयो वदन्ति" कि ये आध्यात्मिक मार्ग कठिन है । हमारे सद्गुरु जो भी कहेंगे वह तलवार की धार पर चलने जैसा है । लेकिन फिर भी कहा गया है कि उठो जागो और जिस मार्ग को कहा गया उसकी प्राप्ति तक रुको मत । इस कथन का गहन विचार करते

महात्मा चाहते हैं कि कोई सज्जन व्यक्ति उनके साथ जुड़ जांये ताकि उसमें भी वो धर्म का बीज बो सकें ।

हुए अपने जीवन में उसका सृजन करें । सत्संग के बाद इस कथन का श्रवण करने के बाद भी आप जैसे हो वैसे ही रहोगे तो हमें उससे कुछ लाभ नहीं होगा । लोग पूछते हैं कि आप भगवा वस्त्र क्यों पहनते हैं,तो अमेरिका में जो काम करता है उसके भगवारंग पहने होने के कारण दूर से दिख जाता है जिससे ये दूर से ही प्रतीत होता है कि हाईवे पर काम चल रहा है । यही कारण है कि हमारे ऋषिमुनियों ने भी पहले सोच लिया था कि भगवा होने से महात्मा भी दूर से दिख जाये जिससे हमें ये समझ में आये कि कोई धर्म का प्रतीक हमारी तरफ आ रहा है । तो आप कितने भी इस जगत् में खोये हुए होंगे उस महात्मा को प्रणाम तो कर ही लेंगे और अगर समझदार होंगे तो प्रणाम करते हुए सिर को झुका ही लेंगे । विचार कीजिए कि हमारे यहाँ धर्म छुपा नहीं है अपितु स्वतन्त्र है । महात्मा धर्म का मूर्त्तस्वरूप हैं, चलते फिरते उनका प्रयास है कि उन्होंने अपने जीवन में धर्म को निखारा है इसलिए वो चाहतें हैं कि कोई व्यक्ति उनके साथ जुड़ जाये ताकि उसमें भी वो धर्म का बीज सृजन करें जिससे उसमें धर्म के प्रति जागृति आये, बुद्धि आये, सोच आये। किसी भी सन्त को बैठे बैठे ही विचार आता है और वह विचार को सबके समक्ष रखता है, ये सब उस गुरु, उस परमात्मा की कृपा से ही सम्भव है । हमें ये ही प्रार्थना करनी है कि परमात्मा उस शक्ति को हमारे लिए ऐसे ही सन्तों द्वारा प्रवाहित करता रहे । मेरे अनुसार आश्रम के चार स्तर होने चाहिए जैसे हमारे यहाँ विद्यालय में प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य ऐसे

हम लोग मूढ लोगों के साथ रहते रहते कब दिशाहीन हो जाते हैं पता ही नहीं चलता, इसके लिए हमें अपने विवेक को जागृत रखना है ।

ही आश्रम में जो नये भक्त आते हैं प्रथमा में आते हैं और जो कुछ वर्षों से आ रहे हैं वो मध्यमा में हैं क्योंकि उनको लगना चाहिए कि हम इस मार्ग में कुछ आगे जा चुके हैं । हमारे यहाँ जो छात्र मध्यमा में आ जाते हैं तो वो सोचते हैं कि हमको कुछ आ चुका है, अब हम बड़े हो गये हैं तो ऐसे ही कुछ वर्षों से आ रहे भक्तों को भी लगता होगा, और भी कुछ अधिक वर्षों से जुड़े हैं जिनको कुछ ज्ञान हो गया है उनकी श्रेणी शास्त्री आचार्यों में होती है । फिर बहुत ही कम जो P.hd वाले अर्थात् एकान्त में रहते हैं । हमारे यहाँ दयानन्द स्वामी जी उस स्थिति में पहुँच चुकी हैं, ध्यान बहुत करती हैं । मैं सोचता हूं कि एक व्यक्ति साधना करते-करते अपने आप को कहाँ ले जा सकता है । एक पुस्तक जिसमें मेरे द्वारा किए गए श्लोकों का संग्रह है उसमें लिखा है कि ज्ञान बढ़े गुरुवान् संगति, ध्यान बढ़े तपसी संगति कीन्हे, मोह बढ़े परिवार संगति, लोभ बढ़े धनचित कीन्हे, क्रोध बढ़े नरमूढ संगति, काम बढ़े तीय की संगति, बुद्धि, विवेक, विचार बढ़े कवि सुसज्जन की संगति । इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हमको मनुष्य की संगत करनी चाहिए क्योंकि संगत का हम पर बहुत प्रभाव पड़ता है सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् अर्थात् सत्संगति मनुष्य का क्या कुछ नहीं करती अर्थात् सम्पूर्ण मनुष्य को परिवर्तित कर देती है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए । हमारा भारत देश संस्कृत और संस्कृति का देश रहा है । हम लोग मूढ लोगों के साथ रहते रहते

हम अपनी संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहें हैं, और पाश्चात्त्य लोग अपनी संस्कृति को छोड़कर हमारी संस्कृति को अपना रहे हैं तो सोचो विशेषता किसकी है ।

हुए कब दिशाहीन हो जाते हैं पता ही नहीं चलता, इसके लिए हमें अपने विवेक को जागृत रखना होगा ताकि ऐसा न हो । जहां विवेक तहां सुमति ऐसा कहते हैं अतः हमें अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए । बाबा जी कहते थे कि हम सब दुनिया घूमते हैं किन्तु अपने लिए क्या करते हैं, अर्थात् कुछ नहीं क्योंकि हम सोचते हैं कि हम लोगों के लिए कुछ करें । जब अपनों के लिए ही कुछ नहीं कर पाते तो दूसरों के लिए क्या करोगे ? इसके लिए हमें अपने विवेक की जरूरत होती है जिसका हम सदुपयोग नहीं करते । बुद्धि के सदुपयोग से ही पता चलेगा कि वास्तविकता क्या है । ये हम तभी जान सकते हैं जब उस सन्त, उस सद्गुरु के सान्निध्य में रहकर के समय बिता सकें और वो जो कहें उस बात को अपने जीवन में उतारते हुए अपने को बनाएं, जानें । इस बात को हम तभी जान सकते हैं जब हमारा सनातन धर्म की कही हुई हर बात पर विश्वास और समर्पण होगा । उसके लिए अपने को सब ओर से तैयार करना होगा । हम अपनी संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहें हैं, और पाश्चात्त्य लोग अपनी संस्कृति को छोड़कर हमारी संस्कृति को अपना रहे हैं तो सोचो विशेषता किसकी है । इसलिए सन्त जो होता है, या सन्त की प्रकृति का होता है, वो एक ही मार्ग पर चलता है और कोशिश करता है कि मैं अपने धर्म के लिए, संस्कृति के लिए, उसके उत्थान के लिए सतत् प्रयास करता रहूँ । उसका ह्रास न होने दूँ। अतः हमारे सिद्ध महर्षि लोग कहा करते थे कि संगति करनी है तो

हमें प्रयास करना चाहिए कि हम जागृत रहें और अपने धर्म और संस्कृति के उत्थान के लिए सतत् प्रयास करते रहें जिससे उसका ह्रास न हो ।

सज्जन की करो क्योंकि वो तुम्हें वहीं लगा कर रखेगा जहां वह स्वयं रत है, वह तुम्हें धर्म के लिए प्रेरित करता रहेगा । सभी सन्त चाहते हैं कि जो भी आये वो सब धर्म के लिए लगा दो जिससे हमारा धर्म बना रहे और निरन्तर प्रवाहित रहे । मैं मानता हूँ कि इस आनन्द-महोत्सव के तीन दिनों में विभिन्न उपाख्यानों में ये ही सब सुनने को मिला है। मैंने बीस पच्चीस देशों का भ्रमण किया है और मानता हूँ कि हमारे यहाँ से लोग जहाँ भी जाते हैं, वो समझते हैं कि हम बहुत होशियार हैं, बुद्धिमान हैं । उस बुद्धि का सदुपयोग करना ही शास्त्र सिखाता है । त्रिदिवसीय आनन्द महोत्सव है कुछ भी विचार आयेगा तो आप उस विचार पर चिन्तन करके अपने जीवन को सार्थक बनाइये । इस जैसे कार्यक्रम में जहाँ भारत के सभी जगह के सन्त पधारे हुए हैं ये एक अवसर है कि हम सन्तों के प्रवचन को सुनें और उनकी कही बातों पर अमल कर जीवन को सुधारें जिससे स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी द्वारा किए गए प्रयास का सुफल उन्हें प्राप्त हो । हमें विचार और चिन्तन करके ये प्राप्त करना है कि हमें मनुष्य देह क्यों प्राप्त हुआ है ? अर्थात् मैंने ऐसे कौन से पुण्य किए जिससे मुझे ये मनुष्य शरीर, जीवन प्राप्त हुआ है ? मेरा लक्ष्य क्या है ? मेरा यहाँ आने का और ये जीवन मिलने का ध्येय क्या है ? इन सब बात को ध्यान करते हुए साधु की संगत करनी है, सज्जनों की संगती करनी है । हमारे देश में इतनी आधुनिकता होते हुए भी सन्तों की वजह से आध्यात्मिकता विद्यमान है । अतः हमें प्रयास करना

सद्गुरु बस ये यही कार्य करता है कि तुम्हारी अन्दर छिपी हुई शक्ति का ज्ञान कराकर तुम्हारी दिशा को एक नया मोड़ देता है ।

चाहिए कि हम जागृत रहें और अपने धर्म और संस्कृति के उत्थान के लिए सतत् प्रयास करते रहें जिससे उसका ह्रास न हो । जब तक हम सद्गुरु की कृपा प्राप्त नहीं कर लेते तब तक अपने में सज्जनता और आध्यात्मिकता नहीं ला सकते । अर्थात् हर किसी के अन्दर अध्यात्मिकता है किन्तु हम सब इस संसार में वैसे ही घूमते हैं जैसे- कस्तूरी कुण्डल बसे मृग ढूढें वन माहिं, तैसे घट घट राम है दुनिया जाने नाहिं। अर्थात् कस्तूरी मृग को नहीं पता होता है कि कस्तूरी उसके नाभि में है और वो उसकी सुगन्ध को पाने के लिए पूरे जंगल में घूमता है लेकिन उसे कस्तूरी नहीं प्राप्त होती, वैसे ही हम लोग संसार के भोगों में फँसकर रह जाते हैं और अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं और हमारा जीवन समाप्त हो जाता है । आध्यात्मिकता भी हमारे अन्दर कहीं छिपी हुई है । सद्गुरु बस यही कार्य करता है कि तुम्हारी अन्दर छिपी हुई शक्ति का ज्ञान कराकर तुम्हारी दिशा को एक नया मोड़ देता है जिससे तुम सज्जनता की ओर बढ़ने लगते हो, तुम्हारे अन्दर आध्यात्मिकता का प्रसार होने लगता है । तब ये संसार तथा ये शरीर मायारूपी प्रतीत होने लगता है। सच है तो सिर्फ एक परमात्मा, एक सद्गुरु, जिसने तुम्हें यह मार्ग दिखाया, जिसने तुम्हें कहा कि तुम उस परम शिव, उस परम पद का ध्यान करो । अगर तुम उनकी कही हुई बातों पर विचार करते हो या उनकी आज्ञा का पालन करते हो आपको ही पता नहीं चलेगा कि मैं कहाँ से कहाँ आ गया, फिर आप सोचोगे कि अरे मैं इतने दिनों से

हमें अपने धर्म को आगे बढ़ाना है तो हमें सतत् उसके लिए प्रयास करना होगा, चिन्तन करना होगा ।

कहाँ इस परमानन्द की शान्ति को छोड़कर भटक रहा था । आप जितने समर्पित अपने गुरु के प्रति, अपने इष्ट के प्रति होंगे उतना आपको लाभ होता है । अगर आप सद्गुरु के पास रहते हुए भी अपने अहंकार में भरे हुए अहंभाव में रहेंगे तो आपका रहना व्यर्थ है, बेकार है । संसार में कुमार्ग पर ले जाने वाले बहुत मिलेंगे लेकिन सुमार्ग पर ले जाने वाला कोई नहीं मिलता । बहुत ही कम लोग होते हैं जो सोचते है कि मुझे कुछ अच्छा करना है । लेकिन सिर्फ चाहते हैं उसके लिए कुछ करते नहीं हैं । लोग देखते हैं कि वो गलत कर रहा है, तो उससे कोई नहीं कहेगा कि तुम गलत मत करो लेकिन उसका प्रोत्साहन जरूर बढ़ायेंगे । ऐसी मानसिकता वालों की वजह से आज धर्म की, संस्कृति की जो हानि होती है उसकी भरपाई करने में समय लग जाता है क्योंकि ऐसी मानसिकता वालों की वजह से हमारे नवयुवक बहुत ही प्रभावित होते हैं और उन्हें पता नहीं चलता कि वो क्या कर रहे हैं । ये ही युवक आगे चलकर हमारे देश को ऊपर ले जाएंगे । हमें अपने धर्म को आगे बढ़ाना है तो हमें सतत् उसके लिए प्रयास करना होगा, चिन्तन करना होगा ।

।। सद्गुरुनाथ महाराज की जय ।।